दीनदयाल शोध केन्द्र

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम (Syllabus)

कर्मकाण्ड डिप्लोमा (एक वर्षीय)

दीनदयाल शोध केन्द्र

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम (Syllabus)

कर्मकाण्ड डिप्लोमा (एक वर्षीय)

प्रथम खण्ड– कर्मकाण्ड आरंभिक परिचय

1. कर्मकाण्ड का उद्गम स्रोत
2. प्रातः कालीन नित्यकर्म विधि
3. पंच महायज्ञ
4. वेदों का संक्षिप्त परिचय
5. पुराणों का संक्षिप्त परिचय

द्वितीय खण्ड –पंचांग परिचय एवं मुहूर्त ज्ञान

1. तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण विचार
2. पंचांग का शुभाशुभ फल विचार
3. जातकर्म, नामकरण एवं अन्नप्राशन मुहूर्त
4. कर्णवेध, चूडाकरण, उपनयन, दीक्षा मुहूर्त

तृतीय खण्ड – विविध मुहूर्त

1. वास्तु शांति, सूत्रिका स्नान, अक्षराम्भ
2. वर वरण एवं विवाह मुहूर्त
3. गृहारम्भ एवं गृहप्रवेश मुहूर्त
4. यात्रा मुहूर्त
5. चंद्रवास, शिववास एवं अग्निवास विचार

कर्मकाण्ड प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

1. उद्देश्य

- यह अनुष्ठान का परिचय देता है तथा उसके महत्व को बताता है ।
- पूजा की विधि का ज्ञान और उसके प्रयोग में निपुणता प्राप्त करना ।
- अनुष्ठानों, संकल्पो और मंत्रों का शुद्ध पाठ – उच्चारण
- भारतीय संस्कृति को बनाए रखना और उसका पोषण करना।

2. **प्रवेशार्हता** – अभ्यर्थी किसी भी मान्यता प्राप्त संस्था से बारहवीं या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण हो।

3. **अवधि** – कोर्स की अवधि एक वर्ष होगी।

4. **शिक्षण माध्यम** – शिक्षण हिंदी या संस्कृत में होगा ।

5. **परीक्षा माध्यम** – परीक्षा में लेखन हिंदी तथा प्रश्न उत्तर संस्कृत भाषा में दिए जाएंगे ।

6. **उपस्थिति** – परीक्षा देने के लिए 75% उपस्थिति आवश्यक है।

7. **प्रश्नपत्र संरचना** – इस कोर्स में तीन प्रश्न पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र में 80 अंक तथा 20 अंक की सैद्धांतिक परीक्षा होगी।
   तीनों प्रश्न पत्रों के पूर्णांक तीन सौ होंगे।

8. **श्रेणी प्रभाग –60% प्रथम श्रेणी**

   50% से 59% तक द्वितीय श्रेणी

   35% से 49% तक तृतीय श्रेणी

9. **विशेष योग्यता – 70%** से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को विशेष योग्य घोषित किया जाएगा।

10. **प्रमाण पत्रम्** – विश्वविद्यालय के नियमानुसार सफल उम्मीदवारों के लिए अनुष्ठान प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र प्रदान किए जाएंगे।

11.अनुष्ठान प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के परिणाम–

- इससे छात्रों को अनुष्ठानों का परिचय और महत्व सीखने में मदद मिलेगी ।
- संस्कारों में संकल्पों, शब्दों स्तुतियों और मंत्रों का सही–सही उच्चारण करने में सक्षम होते हैं ।
- छात्र विभिन्न पूजा पद्धतियों और हवन अनुष्ठानों को सीख कर उनका उपयोग कर पाते हैं ।
- यह कोर्स भारतीय सेना में धर्म शिक्षक के रूप में तथा समाज में पौहित्य कार्य की दक्षता प्रदान करेगा ।
- विभिन्न मांगलिक अवसरों में अनुष्ठानकर्ता को जीविकोपार्जन में सहायता प्रदान करेगा ।
- यह प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की कर्मकाण्ड परम्परा को बनाए रखेगा तथा पोषित पल्लवित संरक्षित करेगा।

प्रथम प्रश्न–पत्र

संस्कृत भाषा का ज्ञान एवं स्तुति 100 अंक

1. शब्द रूप
2. धातु रूप
3. सन्धियाँ
4. कारक
5. प्रत्यय
6. संकल्प कथन
7. संध्या पूजन विधि
8. गणेश स्त्रोत
9. पुरुष सूक्त
10. लक्ष्मी सूक्त
11. देवी स्तोत्रम्
12. शिव स्तोत्रम्
13. नवग्रह स्तोत्रम्
14. शिव मानस पूजा
15. रामरक्षास्तोत्रम्

द्वितीय पत्रम्

पंचांग पूजन 100 अंक

1. तिलक धारण मंत्र
2. पवित्रीकरण मंत्र
3. आचमन मंत्र
4. आसन शुद्धि मंत्र
5. प्राणायाम मंत्र
6. पवित्री धारण मंत्र
7. दीप पूजन मंत्र
8. गणपति पूजन मंत्र

9. कलश स्थापना
10. पुण्याह वाचन
11. अभिषेक
12. मातृका पूजन
13. गौरी गणेश पूजन
14. आयुष्य मंत्र जप
15. नान्दी श्राद्ध विधि

तृतीय पत्र

नवग्रह स्थापना तथा हवन विधि

1. यज्ञ पात्र परिचय
2. पंच भू संस्कार
3. अग्नि स्थापन
4. नवग्रह स्थापन
5. अधि देवता स्थापन
6. प्रत्यधि देवता स्थापन
7. असंख्यात रुद्र स्थापन
8. कुशकण्डिका विधि
9. ग्रह होम
10. उत्तर तंत्र
11. संस्कारों का परिचय

संदर्भ ग्रंथ :–

- नित्यकर्म पूजा प्रकाश, गीता प्रेस
- ब्रह्म नित्यकर्म समुच्चय
- ग्रह शांतिः, वेणीराम शर्मा गौड़
- प्रारंभिकानुवाद चंद्रिका, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठानम्।
- नैमित्तिक देव–देवी पूजन पद्धति –
  (पंडित श्री देवी प्रसाद उपाध्याय)